सम्पादकीय

आमुखापाति कल्याणं कार्य सिद्धिः हि शंसति

प्रिय पाठकों,

जब वर्ष 2003 की बाल्मीकि जंयती के दिन मुझे दि इंडियन जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस के सम्पादक के रूप में कार्य करने का दायित्व सौंपा गया था तब सम्भवतः मुझे इस पद की गुरुता का उतना आभास नहीं था जितना आज भारतीय राजनीति विज्ञान शोध पत्रिका के प्रथमाडक् का सम्पादकीय लिखते समय हो रहा है। चालीस वर्ष से कम अवस्था में भारतवर्ष के राजनीति विज्ञान एवं लोक प्रशासन के सहस्राधिक शिक्षकों, शोधार्थियों एवं अध्येताओं की साधारण सभा में अपने पद की घोषणा से मैं पुलकित था, रोमांचित था, अभिभूत था, प्रसन्न था परन्तु सशंक्ति भी था। वर्ष 1938 में प्रारम्भ हुई इस वैश्विक स्तर पर समादृत संस्था के 63 वर्ष से प्रकाशित हो रहे और अन्तर्राष्ट्रीय अकादमिक जगत में मान्यता एवं प्रतिष्ठा प्राप्त शोध जर्नल के सम्पादन का दायित्व दुरूह अवश्य था। परन्तु उससे जुड़े हुए लाभ एवं सुविधायें अनन्त थे। यह देश भर के राजनीति वैज्ञानियों से जुड़ने का अवसर था। समस्त शैक्षणिक जगत् के समक्ष अपनी सामर्थ्य व शक्ति के सम्यक् प्रदर्शन की चुनौती थी। निरन्तर नूतन शोध कार्यों से अवगत होने की सुविधा थी। नवीन पुस्तकों से साक्षात्कार का संयोग था। नये परिचय व सम्बन्ध बनाने का मौका था। विषय के विभिन्न आयामों को जानने की अनुभूति थी। विभिन्न विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों तथा शोध संस्थानों में कार्यरत सहकर्मी जिज्ञासुओं के विषय क्षेत्रों तथा उपलब्धियों से रूबरू होने का सुअवसर था।

मुझे आज यह कहने में कोई संकोच नही है कि मैनें इस पद के दायित्वों के निर्वहन में उपरिवर्णित लाभ अर्जित किये हैं। अब छः वर्षों से इस दायित्व का पालन करने मे आई असुविधाओं का वर्णन करने में काई लाभ अथवा सार्थकता प्रतीत नहीं होती। परन्तु सुविधाओं का वर्णन करने का लोभ संवरण भी उचित नहीं लगता। अखिल भारतीय राजनीति विज्ञान परिषद् के तत्कालीन महासचिव एवं कोषाध्यक्ष एवं वर्तमान अध्यक्ष प्रो0 सी0 पी0 बर्थवाल ने निरन्तर विभिन्न प्रकार से मेरे इस दायित्व के निर्वहन में असीम सहयोग प्रदान किया है। वर्तमान महासचिव प्रो0 मधुकर श्याम चतुर्वेदी के औदार्य से सभी परिचित है। दि इंडियन जर्नज ऑफ पॉलिटिकल सांइस के सार्वजनिक रूप से अज्ञात विशेषज्ञों के परिश्रम तथा मुझ पर अहेतुक अनुग्रह ने इसे स्तरीय स्वरूप और नियमितता प्राप्त कराने में अनथक साहाय्य प्रदान किया है। बहुत से बन्धुओं ने प्रकट अथवा गुप्त रूप में आर्थिक सहयोग भी प्रदान किया है। मेरे सहयोगी मित्रों ने प्रचुर मात्रा में शोध पत्राादि भेजकर इसे पुनरुज्जीवित करने तथा नियताकालीन बनाने में मुझे शक्ति तथा सम्बल दिया है। अनेक मित्रों ने पारस्पिक तौर पर जर्नल के विज्ञापन निःशुल्क प्रकाशित किये है। बहुत से बन्धुओं ने जर्नल का सदस्यता शुल्क भेजने के मेरे अनुरोध को स्वीकार कृपा की है। कई देशी एवं विदेशी प्रकाशकों ने अपनी नवीनतम पुस्तकें समीक्षा हेतु प्रेषित की हैं। मेरे मित्र प्रो0 मधुरेन्द्र कुमार ने गत् कई वर्षों से निरन्तर जर्नल की प्रूफ रीड़िंग की है। मेरी विद्यार्थी अदिति ने अतुलनीय परिश्रम से अनेक बार जर्नल की प्रैस कापी मे बारीक संशोधन किये हैं। भारतीय राजनीति विज्ञान शोध पत्रिका के प्रथमांक के ऐतिहासिक अवसर पर मैं इन सभी का हार्दिक आभार एवं कृतज्ञता ज्ञापित करना अपना पुनीत कर्त्तव्य समझता हूँ। हालाकिं 'दिल पे मुश्किल है बहुत दिल की कहानी लिखना'।

मैनें ऐतिहासिक शब्द का प्रयोग जान– बुझकर किया है। भारतीय राजनीति विज्ञान परिषद् के अधिवेशनों तथा उत्तर भारत के विभिन्न प्रान्तों में अन्यान्य स्थानों में आयोजित संगोष्ठियों ने पिछले कई वर्षों से हिन्दी भाषा में राष्ट्रीय परिषद् के तत्त्वाधान में एक स्तरीय शोध पत्रिका प्रकाशित किये जाने के

निवेदन, आग्रह एवं प्रतिवेदन निरन्तर देखने को मिलते रहे हैं। गत मार्च–अप्रैल में परिषद् की कार्यकारणी की बैठक में इस प्रस्ताव का अनुमोदन किया गया और जौलाई–अगस्त तक प्रथम अंक प्रकाशित करने को निर्णय लिया गया। मुझे गर्व है कि मैं अखिल भारतीय राजनीति विज्ञान परिषद् के तत्त्वाधान में भारतीय भाषाओं में जर्नल प्रकाशित करने की योजना के अन्तर्गत हिन्दी भाषा की शोध पत्रिका के प्रकाशन के प्रारम्भ होने की प्रक्रिया का न केवल साक्षी हूँ अपितु एक नवीन इतिहास रचने जा रही योजना के प्रस्थानबिन्दु पर सम्पादक रूप में उपस्थित हूँ। इसलिए यह क्षण निश्चय ही निर्णायक है। अद्‌भुत है। रोमांचक है। सुखद है। आह्‌लादकारी है। मैं इस इतिहास का अभिन्न हिस्सा बनने पर मुग्ध हूँ। आनन्दित हूँ। गौरवान्वित हूँ। मैं जानता हूँ कि हिन्दी भाषा मं प्रारम्भ हो रहे इस जर्नल की यात्रा लम्बी है, दुर्गम है, युगान्तरकारी है, परिवर्तनकारी है, और ज्ञान तथा शोध के नवीनतम द्वार अनावृत्त करने की क्षमता रखती है। मैं इस यात्रा के मुखद्वार अथवा मुख्य द्वार सन्नद्ध एक प्रहरी मात्र हूँ। यह दायित्व यथाशक्ति तथा परिषद् की साधारण सभा द्वारा नियत अवधि तक निर्वहन करता रहूँगा। तत्पश्चात् 'कल और आयेंगें सपनों की खिलती कलियाँ चुनने वाले, मुझसे बेहतर कहने वाले, तुमसे बेहतर सुनने वाले'। परन्तु आपका दायित्व सार्वकालिक तथा चिरन्तन है। किसी का प्रकाशन को नियतकालीन, नियमित तथा निरन्तर बनाये रखने की प्रक्रिया में सर्वाधिक महत्वपूर्ण बिन्दु एवं तन्तु आप हैं। आपका सक्रिय सहयोग, आपकी अनवरत तथा अक्षुण्ण रुचि, आपका आर्थिक, सांस्थानिक तथा अकादमिक अवदान, आपका अभिमत, आपकी प्रतिक्रिया और आपकी सावधानी ही इस भारतीय राजनीति विज्ञान शोध पत्रिका की प्राणवायु होगी। अतः मैं आप सभा मित्रों, शुभचिन्तकों से विनम्र करबद्ध निवेदन करता हूँ कि आप यथाशक्ति एवं यथासम्भव इस अकादमिक यज्ञ में आहुति दें। आपके सुझाव हमारे परिश्रम को सार्थक दिशा प्रदान करेंगे। मैं अत्यन्त विनम्रतापूर्वक यही कहूँगाः–

गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः।

हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सन्जनाः।।

14 जनवरी 2009 (संजीव कुमार शर्मा)

मकर संक्रान्ति